विषय-सूची

प्रस्तावना	v
अनुवादक की ओर से	vii
आमुख	ix
सन्दर्भ संकेत सूची	xvii
भूमिका	**1—66**
प्राचीन भारत में ध्वनिशास्त्र के लिए अभिरुचि : ऋग्वेद में इस अभिरुचि के बीज	1
ऐतिरेय ब्राह्मण में इस अभिरुचि का और आगे विकास	2
ऐतिरेय ब्राह्मण के उन्नत ध्वन्यात्मक विचार	3
अक्षर-विभाजन का सिद्धान्त	5
"शिक्षा" का स्वरूप एवं प्रसार-क्षेत्र : इसके चार अर्थ	5
(1) उच्चारण के विषय में मौलिक शिक्षण	5
(2) सामान्य भाषा-विज्ञान : प्रातिशाख्यों के आदि प्ररूप के रूप में क्या पाणिनीय शिक्षा प्रातिशाख्यों की आदि प्ररूप थी ?	6
ऋ, ॠ तथा ऌ के विषय में इसके प्रातिशाख्यों से मूलतः भिन्न विचार	8
(3) ध्वनिशास्त्र की विशेष देन	13
(4) कभी-कभी शिक्षा का अर्थ "प्रातिशाख्य" भी	14
"प्रातिशाख्यों" का स्वरूप एवं विषय-क्षेत्र	15
व्याकरण के साथ इनका सम्बन्ध	16
प्रस्तुत प्रबन्ध का लक्ष्य एवं योजना	20
भारतीय वैयाकरणों द्वारा दिए गये कुछ सुझावों की आधुनिक भाषा-विज्ञान के लिए उपयोगिता	24
ध्वनि-विज्ञान पर भारतीय वाङ्मय का काल क्रमिक इतिहास : इसकी समस्यायें	24
पातञ्जल महाभाष्य में प्राप्त एक महत्त्वपूर्ण अंश : प्रातिशाख्यों के काल-क्रमिक इतिहास पर इसका प्रभाव	25
प्रातिशाख्यों का कालक्रमिक अनुक्रम	26
तैत्ति० प्राति० के मूल रूप की पाणिनि से प्राचीनता	27
तैत्ति० प्राति० के कुछ अंशों में आधुनिकता की छाप	29

ऋक् प्रातिशाख्य की तैत्ति० प्राति० से पूर्वता 29
अथर्व० प्राति० निश्चित रूप से आधुनिकतम प्रातिशाख्य नहीं 33
ऋक्तंत्र व्याकरण तथा इसमें संस्कृत का "भाषा" के रूप में निर्देश 34
प्रातिशाख्यों के कालक्रमिक इतिहास का निष्कर्ष 34
पाणिनि से उन्हें निश्चित रूप से पूर्ववर्ती एवं उत्तरवर्ती स्वीकार करने की कठिनाई 34
शिक्षाओं का कालक्रमिक इतिहास 35
शिक्षाओं की सर्वसामान्य विशेषताएँ 36
उपलब्ध शिक्षाओं का वर्गीकरण 37
शुक्ल यजुर्वेदीय शिक्षाएँ 37
यजुर्वेद शिक्षा 38
पाराशरी शिक्षा 40
माण्डवी शिक्षा : 'व्' तथा 'ब्' में अभेद करने वाली बोलियों के सम्बन्ध में इसका विधान 41
माध्यन्दिनी शिक्षा: पञ्चज स्पर्श 'ख्' तथा मूर्धन्य 'ष्' के अन्तर को स्पष्ट करने का इसका प्रयत्न 42
वर्णरत्न दीपिका शिक्षा 43
कृष्ण यजुर्वेदीय शिक्षाएँ 44
चारायणीय शिक्षा 44
तैत्तिरीय शाखा की शिक्षाएँ तथा उनका महत्त्व, भारद्वाज शिक्षा 46
व्यास शिक्षा 48
शम्भु शिक्षा 48
सर्वसम्मत शिक्षा : फ्राँक द्वारा प्रकाशित ग्रन्थ से मूलत: भिन्न ग्रन्थ 50
सिद्धान्त शिक्षा : इसका कालक्रमिक महत्त्व 53
आपिशलि शिक्षा 54
कालनिर्णयशिक्षा 55
पारिशिक्षा : इसके लेखक के विषय में औत्सुक्य 56
वैदिकाभरण : शिक्षाओं के अध्ययन के लिए इसका महत्त्व 58
नारद शिक्षा : सामगीत रत्नाकर एवं भरत कृत नाट्य शास्त्र के साथ इसका कालक्रमिक सम्बन्ध 58
लोमशी शिक्षा 61
गौतमी शिक्षा 62
माण्डूकी शिक्षा 62
शिक्षाओं के काल-क्रम पर सामान्य पर्यवेक्षण, वर्तमान काल में उपलब्ध रूपों की अपेक्षा उनमें पर्याप्त प्राचीन परम्परा का अभिलेखन 63
भौगोलिक सामग्री 64

अध्याय 1 : अक्षर 67—73

अक्षर की परिभाषा : इसका मूल तत्त्व : स्वर 67
अक्षरीकरण में स्वर तथा व्यंजन का सम्बन्ध : व्यंजन अधिक आश्रित ध्वनि 68

भारतीय सिद्धान्त की आलोचना 68
'स्वर' तथा 'व्यंजन' का सम्भाव्य अर्थ 70
परिशिष्ट 'अ' : 'र्' के व्यंजनत्व एवं स्वरत्व पर 'स्वर व्यंजन शिक्षा' के विचार 71

अध्याय 2 : आक्षरिक विभाजन के नियम 74—103

व्यंजन+स्वर का अक्षरीकरण : स्वरान्तवर्ती व्यजन सम्बन्धी नियम की आलोचना 74
पदान्त व्यंजनों का अक्षरीकरण : भारतीय मत की प्रौढ़ता 75
व्यंजन-समूह का अक्षरीकरण : समूह के प्रथम अंश के पूर्ववर्ती अक्षर का अंगत्व : इस मत की प्रौढ़ता की, पाण्डुलिपियों, शिलालेखों तथा जीवित बोलियों द्वारा पुष्टि 76
द्वित्व व्यंजनों का अक्षरीकरण : इस विभाजन के भाव की सबलता 81
स्पर्श+संघर्षी ध्वनियों का अक्षरीकरण 85
व्यंजन+अन्तस्थ तथा अन्तस्थ+अन्तस्थ का अक्षरीकरण 90
यमों का अक्षरीकरण : बोलीगत विविधताओं के सम्बन्ध में विभिन्न रुचिकर विचार 93
अनुस्वार का अक्षरीकरण 96
स्वरभक्ति का अक्षरीकरण : स्वरित स्वराघात के उपरान्त स्वरभक्ति को स्वतंत्र अक्षर की मान्यता 99

अध्याय 3 : आक्षरिक मात्रा 104—106

अक्षरविभाजन से निरपेक्ष आक्षरिक मात्रा के विमर्श की असम्भाव्यता : अतः भारतीय वैयाकरणों द्वारा विशिष्ट विवेचन का अभाव 104
कालावधि सापेक्ष आक्षरिक मात्रा के सामान्य सिद्धान्त की ध्वन्यात्मक रूप में प्रौढ़ता 105
रूढ़िगत नियमों की अपेक्षा ध्वन्यात्मक आवश्यकता की प्राथमिकता 106

अध्याय 4 : आक्षरिक मात्रा के नियम 107—115

आक्षरिक मात्रा सम्बन्धी नियमों की मौलिक प्रौढ़ता 107
तथाकथित-'कवि-स्वातन्त्र्य' के सम्बन्ध में बौद्ध छन्दोविधान से उदाहरण 107
लय का ध्वन्यात्मक एवं मनोवैज्ञानिक आधार 109
संस्कृत साहित्य में व्यंजन समूह की दीर्घ अक्षर रचना : शिशुपालवध से आंकड़े 110
बौद्ध संस्कृत छन्दशास्त्र में व्यंजन संयोग 111
बौद्ध संस्कृत साहित्य के उच्चारण द्वारा प्राकृत के लिए मार्ग प्रशस्त करने की संभावना 114

अध्याय 5 : द्वित्व **116—144**

द्वित्व पर तीन मत 116

स्वरान्तर्वर्ती व्यंजनों का द्वित्वीकरण : वाज० प्राति० एवं शिक्षाओं के सामान्य विचार 117

पुरातन, मध्यकालीन एवं आधुनिक भारतीय भाषाओं में स्वाभाविक स्वरान्तर्वर्ती व्यंजनों के द्वित्व का सर्वेक्षण 119

शब्दांत व्यंजनों का द्वित्वीकरण 122

सन्धि में द्वित्वीकरण : अन्त्य व्यंजनों के नित्य द्वित्वीकरण पर चारायणीय शिक्षा के विचार : साहित्यिक संस्कृत में इसकी तथ्यता 123

"संहिता" एवं "अन्त्य" की परिभाषा 125

"उच्छव" जैसे शब्दों पर इसका प्रत्यक्ष प्रभाव 127

द्वित्वीकरण की सीमाएँ : 'त्रिव्यंजन विधान' 128

द्वित्व किए जा सकने वाले व्यंजनों की परिगणन 131

'स्' का केवल दो संस्कृत शब्दों में द्वित्वीकरण 132

'ह्' का कभी-कभी द्वित्वीकरण 133

दीर्घस्वरों के उपरान्त द्वित्व की अमान्यता 134

द्वित्वीकरण के विस्तृत नियम : 135

(1) द्वित्वीकरण की सामान्य स्थिति : स्वर+व्यंजन संयोग 135

(2) अनुस्वार+व्यंजन संयोग 136

(3) र्+व्यंजन 138

(4) ल्+स्पर्श : विचारों की सामान्य पुष्टि 139

(5) स्पर्श+स्पर्श : जीवित भाषाओं द्वारा नियम की पुष्टि 139

संस्कृत पाण्डुलिपियों में द्वित्वीकरण का कारण संस्कृत 'सप्त्त' का द्वित्वीकरण वस्तुतः प्राकृत के 'सत्त' के द्वित्वीकरण का पूर्वगामी रूप 140

(6) संघर्षी+नासिक्य व्यंजन के अन्तराल में श्वास व्यंजन का अन्तःपात; 'विष्णु' का 'विष्ट्णु' उच्चारण 140

इस पर्यालोचन के रोचक सुझाव 142

अध्याय 6 : विभिन्न अवस्थितियों में 'य्' तथा 'व्' का उच्चारण 145—152

'य्' तथा 'व्' प्रत्येक के तीन प्रकार; गुरु (भारी) (आद्य), लघु (हल्का) (मध्य), 'अतिलघु' (अन्त्य) 145

निपात के आद्य 'य्' 'व्' के लघुत्व का विचार 146

कुछ उपसर्ग आदि के विषय में और अधिक विवरण 147

इन विचारों की सामान्य यथार्थता 148

सन्धि से उद्भूत स्वरान्तर्वर्ती 'य्' 'व्' का अतिलघुत्व 149

निष्कर्ष 151

अध्याय 7 : स्वरभक्ति **153—157**

ऊष्मों से पूर्व भारतीय वैयाकरणों द्वारा स्वरभक्ति के निर्देश का कारण 153

ऊष्म के उपरान्त व्यंजन के रहने पर स्वरभक्ति न होने का कारण 155

बोलीगत विभिन्नताओं पर आधारित स्वरभक्ति के उच्चारण के सम्बन्ध में भिन्न विचार 156

अध्याय 8 : अभिनिधान (अपूर्ण उच्चारण) 158—170

अपूर्ण उच्चारण के लिए भिन्न शब्दों का प्रयोग 158
इस तथ्य का सामान्य विवरण 158
अभिनिधान वाले ध्वनि समूह या ध्वनियाँ 158
(1) स्पर्श+स्पर्श 158
इस पर तीन भिन्न-भिन्न मत 159
इन मतों की सम्भाव्य तथ्यता 160
(2) शब्दान्त अभिनिधान 162
(3) व्यंजन विशेषों में अभिनिधान की विभिन्नता 164
(4) आलंकारिक रूपों में व्यंजन समूहों का निरूपण, किन्तु उनके अर्थों की अस्पष्टता 168

अध्याय 9 : अनुस्वार 171—178

अनुस्वार के सम्बन्ध में तीन मत 171
(1) नासिकीकृत स्वर के रूप में 171
(2) एक व्यंजन अथवा स्वर के रूप में : ऋग्वेद में दोनों प्रवृत्तियों की विद्यमानता 173
(3) 'व्यंजन अथवा अर्धगकार" शिलालेखों एवं आधुनिक भारतीय भाषाओं द्वारा इसकी पुष्टि 174
लौकिक संस्कृत से पूर्व एवं लौकिक संस्कृत साहित्य में अनुस्वार के व्यंजन तत्त्व का प्राधान्य, किन्तु उत्तरवर्ती भाषायी विकास में स्वरात्मक तत्त्व की ओर अधिक झुकाव 177

अध्याय 10 : स्वराघात का स्वरूप 179—194

स्वराघात की संगीतात्मकता : संगीत के सप्त सुरग्राम की स्वराघात के तीन स्वरों से उत्पत्ति 179
वाक् (भाषा) तथा संगीत के बीच सम्बन्ध का स्पष्ट विवेचन 180
कभी-कभी अनुदात्त स्वराघात का उच्च रूप में गान : कुछ संगीतात्मक सन्दर्भों में उदात्त की उच्चतम प्रतीति 184
आघातन में श्वास का योगदान 185
स्वराघात की उच्चता का सिद्धान्त 185
आघातन में आँख तथा नासिका का योगदान 190
स्वराघात एवं मात्रा, दीर्घ उपान्त्य, अनाघातित अन्त्य, लघु उपान्त्य, आघातित अन्त्य 191
स्वरित के उपरान्त व्यंजनों की दीर्घतर कालावधि 193

अध्याय 11 : मात्रा **195—214**

वाक् के तीन प्रकार : द्रुत, मध्य एवं विलम्बित : इनके अनुपात का मानकीकरण 195
मध्यवाक् मात्रा मापन का आधार 197
मात्रा की ध्वनि गुण से निरपेक्षता 197
वाग्धारा के कारण ध्वनि की निरन्तरता की अप्रभाविता 198
स्वरान्तर्वर्ती श्वास व्यंजन के आंशिक स्वरीकरण के विषय में पतंजलि के रुचिकर विचार। 200
मात्रा के मानक 202
मात्रा सम्बन्धी नियम 204
(1) स्वरों की मात्रा 204
स्वरों की चार प्रकार की मात्रा की मान्यता, जिनमें 'क्षिप्र' अर्ध-दीर्घ स्वर भी सम्मिलित है 205
प्लुति में 'ऐ' तथा 'औ' सन्ध्यक्षरों के अंश विशेष का दीर्घीकरण 206
प्लुत की अवस्थितियाँ 208
(2) व्यंजन की मात्रा 210
(3) विराम की मात्रा 212
दीर्घ स्वर के बाद अनुस्वार की मात्रा की ह्रस्वता : जीवित बोलियों का साक्ष्य 214

निष्कर्ष 215

भारतीय व्याकरणिक ग्रन्थों से उद्धृत शब्दों की अनुक्रमणी 216
पारिभाषिक शब्दावली 220